फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **302** *1/–* *अगस्त* **2013**

तरेड़, विभाजन, उल्लंघन

कहानी अब तक की

सत्ता खुद को सर्व-शक्तिमान दिखाने की कोशिश में लगी रहती है। वो अपने साये तले हर कुछ को कुछ दे पाने की, उससे कुछ छीन लेने की, और उसे उत्पादक रखने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन करती रहती है। रोजमर्रा की मुठभेड़ों में इसके प्रति आकर्षण, संदेह, शंका, रोष उभरते रहते हैं। जिनसे एक आलोचना उत्पन्न होती है कि – सत्ता का ये प्रवाह निद्राहीन रातों, स्वप्न-हीन निद्रा, विस्तार-हीन सपनों की तरफ धकेल देता है लोगों को।

अधिकतर जीवन के बारे में सोच सत्ता के जीवन के प्रति प्रहार को समझाने में चली जाती है। आलोचक की क्षमता व श्रेणी पे निर्भर है कि वो इस प्रहार को कितना बारीक और कितना व्यापक दिखाएगा। पर अपनी क्षमता को जाहिर कर पाना प्रहार को दिखा पाने से ही है। यहाँ तक कि, कुछ आलोचक तो प्रहार को दिखाते-दिखाते खुद ही आतंकित और शिथिल हो जाते हैं।

इस कहानी की उदासी

मुश्किल ये है कि सत्ता के प्रहार की आलोचना जिसके भी नाम पे की जाती है, आलोचना के बढते-बढते वही धुँधला और गायब होता जाता है। क्योंकि जीवन पे प्रहार का बोल वजनदार होता जाता है, और उसके बीच जीवन क्या है की कल्पना – उसका सवाल, उसकी छवि – लुप्त से होते जाते हैं।

सुन कर एक साथी ने कहा, ''ये बात जीवन से दूर थोड़े ही है। मैंने अकसर देखा है कि जब भी मैं किसी को सोच नहीं पाती, या सोचना नहीं चाहती, तो उसे 'बेचारा' शब्द में लपेट लेती हूँ, और इस तरह सोच से बेदखल कर देती हूँ। बस, फिर सारी बातचीत उसकी जीवन-स्थिति, हालात, अवस्था, इन सब में सिकुड़ जाती है। बात जिस किसी से भी शुरू हुई हो, फर्क नहीं पड़ता। वो हो या ना हो, या कोई और हो, चलेगा। सोच से लुप्त हो जाए, फिर उसका जीवन की कल्पना से लुप्त हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है।''

कहानी में ट्विस्ट

इस आलोचना की धार जीवन के कुछ विभाजनों को लेकर चलती है– विभाजन श्रम और बुद्धि के बीच, ज्ञान और अनुभव के बीच, निकट के जाल में फंसे होने और क्षितिज देख पाने की क्षमता रखने के बीच।

उत्पादन में (जैसे कि फैक्ट्री में) साधनों पर कब्जा जिसका, ज्ञान, तकनीकी और मानसिक समझ, और दूरदर्शिता का दावा उसके। पर सब ये भी जानते हैं कि इस दावे पर हमेशा प्रश्न चिन्ह रहता है। सही मौके पर छोड़ी गई एक मामूली सी हँसी भी इस दावे में तरेड़ पैदा कर जाती है।

परिचित हैं सभी – इस सत्ता से, उसके दावे से, और तरेड़ पैदा करने वाली उस हँसी से भी। साथ ही, विभाजन की अस्थिरता से भी परिचित हैं सभी। हालाँकि, जितना सत्ता खुद को दिखाती है, उतना ही वो दिखाती है कि सब कुछ उसके कंट्रोल में है। और आलोचना पार्टी भी यही दिखाती है कि सत्ता कितना हावी है। गई तरेड़ पानी में!

मारुति में जब एक साथी ने फैक्ट्री में अपने साथियों के साथ दस दिन सत्ता के कब्जे को हटा, एक साथ रहने के बाद कहा था कि, ''हम इन दस दिनों में एक-दूसरे को ऐसे देख पाए जैसे कि पहली बार देख रहे हैं'', तो इससे शायद हम अनुमान लगा सकते हैं कि वो हँसी की तरेड़ में रह कर सत्ता के कब्जे को दूर धकेलने पर एक अलग जीवन के रूप का परिचय कर पाए थे। हँसी तो क्षण-भंगुर है। आई और चली गई। पर उससे उत्पन्न तरेड़ में रहना, उसे सोच में रख पाना – ये जीवन का जीवन को न्यौता है, जीवन के विस्तार का सवाल है।

इस हँसी को पहचानने में आखिर बाधा क्या है ?

मुश्किल ये है कि आलोचना की भाषा आम जीवन की व्यवस्था को कार्य-स्थल की जो व्यवस्था है, उसी का प्रतिबिंब बताती है। कार्यस्थल के जितने भी विभाजन हैं, उनमें आम जीवन की भाषा को रच देती है, उन्हें यहाँ दोहराती है। यानी, अनुभव और ज्ञान, श्रम और बुद्धि, निकट के जाल में फँसे होना और क्षितिज देख पाने की क्षमता के विभाजनों को दोहराती है। एक तरह से देखा जाए तो बहुत सरल है – एक थका हुआ, दुखी, सत्ता से पिटा हुआ इंसान – क्या ये भला किसी के लिये सोच की भूमि बन सकता है? सत्ता को चुनौती देने वाली छवि बन सकता है?

मित्रो, ये गंगा तो उल्टी बह रही है!

इस विभाजन पे शंका होने पर एक साथी ने अपने बसेरे में कई लोगों से बात की। उसका सवाल था कि, ''लोग एक-दूसरे को पहचान और मान किस अंदाज से देते हैं?'' एक से दूसरे से तीसरे से बात करते-करते उसे कई शब्द मिले –

समझदार, ज्ञानी, बात निभाने वाला, उपाय सुझाने वाला, दीन-दुनिया समझने वाला, अनुभवी, खबर रखने वाला, जानकार, सूफी, संत, वो जिसके पास हर बात पे कहानी हो।

दूर से खबर लाने वाला, सलाह देने वाला, जिसपे भरोसा किया जा सके, नॉलेज रखने वाला, दीन-दुनिया में रहने वाला, समझने वाला, और ढँग से सोचने वाला, उल्टा दिमाग रखने वाला, सुनने वाला, खूब पढने वाला, साथ खड़ा होने वाला, हिम्मत बाँधने वाला, होशियार, जादूगर, काबिल, जिम्मेदार।

उसने पाया कि ये शब्द युवा-युवतियों के पास भी हैं, बुजुर्गों के पास भी, माता-पिता दोनों के जीवन में भी हैं, काम करने वालों और बेरोजगार, सफल और असफल, शरीफ और बदमाश के जीवन में भी हैं। और अब वो जूझ रहा है कि ये शब्द किस गहरी दुनिया, जीवन के किन स्रोत्रों से उभरते हैं? और खासतौर से ये कि निवास, कार्य-स्थल, शहर, गाँव के विवरण, उनके बारे में जैसे बात की जाती है, इससे ये सारे जीवंत शब्द ओझल और लापता क्यों हो जाते हैं? उस मित्र का अनुमान है कि दुनिया में वार्ता में शिकायत और अर्जी की भाषा हावी रहती है। दलील देने वाले इस भव्य दुनिया को ओझल कर देते हैं।

एक और सवाल जिससे यह मित्र जूझ रहा है वो है कि आखिर शिकायत और अर्जी की भाषा हावी है क्यों? इस हावी होने के पीछे किस तरह की सामाजिक व्यवस्था और रिश्ते हैं?■

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

✶ पहली जुलाई 2013 से देय डी. ए. की घोषणा ***हरियाणा*** सरकार ने अगस्त-आरम्भ तक नहीं की है। 1.1.2013 वाले निर्धारित न्यूनतम वेतनःअकुशल मजदूर : 5212रुपये (8 घण्टे के 200 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर : 5862 रुपये (8 घण्टे के 225रुपये)। पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

✶ ***दिल्ली*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (1.4.2013 से) अकुशल श्रमिक : 7722 रुपये (8 घण्टे के 297 रुपये) ; अर्ध-कुशल श्रमिक : 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये) ; कुशल श्रमिक : 9386 रुपये (8 घण्टे के 361 रुपये) स्नातक और अधिक (स्टाफ) : 10,218 रुपये (8 घण्टे के 393 रुपये)। पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054

इनकास इन्टरनेशनल मजदूर : "142 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 75 स्थाई मजदूर और 125 कैजुअल वरकर ***ट्रिबर्ब, एम डी, डी के एन वाई, जेक्रो, लीफन*** के लिये चमड़े के शर्ट, पैन्ट, जैकेट, बैग, पर्स बनाते हैं। बायर आते हैं और आफिस से ही चले जाते हैं — मजदूरों से कुछ नहीं पूछते। सुबह 9 से साँय 5½ की ड्युटी है पर प्रोडक्शन वरकरों से महीने में 20 दिन तो रात 2 बजे तक काम करवाते ही हैं। महीने में 150 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अधिकतर मजदूर कापसहेड़ा तथा डुण्डाहेड़ा में रहते हैं और रात 2 बजे छूट कर कमरों पर जाते हैं। जो मजदूर दूर से आते हैं वे रात 2 बजे के बाद फैक्ट्री में ही सो जाते हैं और सुबह 9 बजे से फिर काम शुरू हो जाता है। बस कमरा और ड्युटी रहते हैं, फैक्ट्री से बाहर के लोगों से मिलना-जुलना हो ही नहीं पाता। प्रोडक्शन में हैल्परों को 8 घण्टे के 201 रुपये और ऑपरेटरों को 270-280 रुपये देते हैं। सैम्पलिंग मजदूरों की सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और उन्हें भुगतान पीस रेट से है। कैजुअल वरकरों को ब्रेक दे कर फिर रख लेते हैं और उन्हें बोनस नहीं देते। फैक्ट्री में पानी की बहुत दिक्कत, कभी-कभी होता ही नहीं, टैंकर आता है तब ऊपर टंकी में भरवाते हैं।"

वॉयथ पेपर फैब्रिक्स श्रमिक : "प्लॉट 113-14 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर काम करते हैं। इधर तीन महीने से कम्पनी ने आई. टी. आई. किये 15-20 नये लड़कों को ट्रेनी रखा है। फैक्ट्री में 1979 के बाद किसी मजदूर को स्थाई नहीं किया है। स्थाई मजदूरों को तनखा के अलावा पीस रेट भी देते हैं और उनके महीने में 35 से 80 हजार रुपये बनते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे 5 से 20 वर्ष पुराने मजदूरों की तनखा 5212 से 7000 रुपये, कुछ ऑपरेटरों की 8100 से 12000 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रख रहे नये मजदूरों की तनखा 8 से 13 हजार रुपये। पहले इसे ***पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर,*** कम्बल फैक्ट्री कहते थे हालाँकि यहाँ कम्बल नहीं बनते, कागज की फैक्ट्रियों के लिये फैल्ट बनते हैं।"

जे एन एस कामगार : "प्लॉट 4 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्टाफ ही स्थाई है। चार हजार मजदूरों को पन्द्रह ठेकेदारों के जरिये रखा है। तीन हजार महिला मजदूरों द्वारा सुबह 8½ से साँय 5, रात 8 बजे तक काम। फैक्ट्री चौबीसों घण्टे चलती है। महिला मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान 25 रुपये प्रतिघण्टा और पुरुष मजदूरों का 20 रुपये प्रतिघण्टा। फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी, होण्डा, हीरो*** वाहनों के मीटर बनते हैं। निर्धारित उत्पादन 8 घण्टे में 4000 मीटर का है और बहुत तेज रफ्तार पर भी बनते 3500-3600 ही हैं। मजदूरों को कहते ऑपरेटर हैं पर ग्रेड हैल्पर का देते हैं।"

कोका कोला वरकर : "276-277 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में अधिकतर मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। तनखा मात्र चार हजार रुपये और वह भी समय पर नहीं। इससे हम मजदूरों को भारी परेशानी होती है। रोज 12 घण्टे ड्युटी करते हैं और खर्चा नहीं चल पाता। कम्पनी हमारी बात सुनती नहीं। सरकार सुनती नहीं। हम लोगों की बात कोई सुनने वाला नहीं है। पैसे माँगने पर ठेकेदार टाल-मटोल करते हैं, कहते हैं पैसे नहीं हैं, पाँच सौ माँगने पर सौ रुपये देते हैं। बारह घण्टे काम के बाद भी जबरदस्ती रोक लेते हैं। गाली भी देते हैं।"

वर्कशॉप मजदूर : "मुजेसर, फरीदाबाद स्थित वर्कशॉप पर कोई बोर्ड नहीं है, हम नाम नहीं जानते। यहाँ 2 महिला और 8 पुरुष काम करते हैं। महिला मजदूरों की तनखा 4200 रुपये और पुरुष मजदूरों की 5500 से 9000 रुपये। महिलाओं की ड्युटी सुबह 8½ से साँय 7 और पुरुषों की सुबह 8½ से रात 9 की। रविवार को सब की सुबह 7 से दोपहर बाद 3 बजे तक ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। महीने में एक भी छुट्टी नहीं, वर्ष में मात्र 3 छुट्टी। यहाँ मुख्यतः डाई बनाते हैं। वर्कशॉपवाले की कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 25 मजदूर हैं, पावर प्रेस हैं, कुछ मजदूरों की ई.एस.आई. है। दोनों स्थानों पर वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं और गुड़गाँव में ***मारुति सुजुकी,*** रुद्रपुर तथा झारखण्ड जाते हैं। वर्कशॉप में कोई सुपरवाइजर अथवा फोरमैन नहीं है पर वर्कशॉपवाला नहीं होता तब पुराने मजदूर ही साहब बन जाते हैं। जहाँ नौकरी करते हैं वहाँ चिक-चिक हो तो दो घण्टे भी काटने भारी पड़ जाते हैं। बड़ी फैक्ट्रियों में उत्पादन निर्धारित होता है पर वर्कशॉपों में कितना भी काम कर लो, यही कहेंगे : इतना ही किया ? इधर आओ, उधर जाओ, यह करो, वह करो। अब तो पाँच मिनट लेट पहुँचने पर भी चिक-चिक करते हैं। मुजेसर में वर्कशॉपों में बड़ी सँख्या में 14-15 वर्ष आयु के बच्चे काम करते हैं।"

एफ सी सी रीको श्रमिक : "प्लॉट 5 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 300 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं। लेकिन कुछ मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और इन मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, वार्षिक बोनस नहीं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, और तनखा देरी से — 20 तारीख तक।"

लक्सर कामगार : "867 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में तनखा 4967 रुपये है। यहाँ ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी नहीं करते, सैलरी के आधे दर से ओवर टाइम के पैसे देते हैं। छह महीने पूरे होने पर करीब एक महीने का ब्रेक दे देते हैं। हिसाब के नाम पर पी.एफ. जितना काटा था उतना ही देते हैं, दुगुना करके नहीं देते। निर्धारित उत्पादन अधिक है, टारगेट इतना ज्यादा है कि मजदूर की सेहत खराब होने लगती है। यह सब देख कर जो बन्दे काम छोड़ते हैं उन्हें इस्तीफा लिख कर देने को कहा जाता है। रिजाइन लिखवाने के बाद 10-15 दिन दौड़ाया जाता है और तब कहीं जा कर पैसे देते हैं। पैसों के चक्कर में 5-6 दिहाड़ी मारे जाने, 1500-2000 रुपये का नुकसान होने पर कुछ बन्दे अपनी किसमत को कोस कर और कम्पनी को बददुआ दे कर इन पैसों को छोड़ जाते हैं। लक्सर कम्पनी ने मेरी पत्नी के साथ भी ऐसा ही किया है। रिजाइन लिखवाने के बाद पैसों के लिये 15, 18, 20, 25 जुलाई की तारीखें दी। पैसे नहीं दिये। हम ने आपस में 30 जुलाई को अन्तिम तारीख तय की पर कल, 30 को भी कम्पनी ने पैसे नहीं दिये।"

सन्धार वरकर : " प्लॉट 24-25 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम होता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। स्थाई मजदूर शायद ही कोई हो, 600 मजदूरों को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है। तनखा से पी.एफ. राशि काटते हैं पर मजदूरों को पी.एफ. नम्बर नहीं बताते। यहाँ ***मारुति सुजुकी*** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं।"

ईस्टर्न मेडिकिट

प्लॉट 195, 196, 205, 206 उद्योग विहार फेज-1, प्लॉट 292 फेज-2 और सैक्टर-37, गुड़गाँव स्थित ***ईस्टर्न मेडिकिट*** कम्पनी की फैक्ट्रियों को जस की तस छोड़ कर मैनेजमेन्ट 18 मई 2012 को "गायब" हो गई।

कम्पनी पर पंजाब नेशनल बैंक और यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया का 25-30 करोड़ रुपये कर्ज। प्रोविडेन्ट फण्ड के 2½ करोड़ रुपये बकाया, कच्चा माल देने वाली पार्टियों के पैसे बकाया, गुड़गाँव ग्रामीण बैंक के 60 लाख रुपये बकाया — कर्ज की अदायगी के लिये मजदूरों की तनखा से किस्तों के पैसे काटे पर ग्रामीण बैंक में जमा नहीं किये, बिजली बिल के 60-65

(बाकी पेज तीन पर)

ई.एस.आई. लूट

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई. कारपोरेशन) की चर्चा सरकारें एक कल्याणकारी सँस्था के तौर पर करती हैं। भारत सरकार के आँकड़ों के अनुसार 31 मार्च 2012 को सब प्रान्तों में 5 लाख 80 हजार नियोक्ताओं के जरिये रखे गये 1 करोड़ 71 लाख मजदूरों की ई.एस.आई. थी। मजदूर और उनके परिवार, कुल 6 करोड़ 63 लाख लोग ई.एस.आई. के प्रावधानों के तहत थे। और, कल्याण के लिये एक वर्ष में 28 हजार 317 करोड़ रुपये ई.एस.आई. ने एकत्र किये थे।

ई.एस.आई. कल्याण की वास्तविकता के लिये हरियाणा प्रान्त को एक उदाहरण के तौर पर लेते हैं। 31 मार्च 2013 को 34 हजार 944 नियोक्ताओं के जरिये हरियाणा प्रान्त में रखे 16 लाख 32 हजार 121 मजदूरों की ई.एस.आई. थी। मजदूर और उनके परिवार, कुल 65 लाख 28 हजार 484 लोग ई.एस.आई. प्रावधानों के तहत थे। हरियाणा प्रान्त की करीब एक चौथाई आबादी ई. एस.आई. की कल्याणकारी छतरी के नीचे है। पिछले तीन वर्षों में 422 करोड़ 48 लाख, 519 करोड़ 15 लाख, 524 करोड़ 89 लाख रुपये प्रतिवर्ष ई.एस.आई. ने हरियाणा प्रान्त से एकत्र किये। सब गड़बड़घोटालों समेत, इन तीन वर्षों में हरियाणा प्रान्त में सब मिला कर कुल 106 करोड़ 48 लाख 7 हजार, 151 करोड़ 86 लाख 72 हजार, 150 करोड़ 26 लाख रुपये प्रतिवर्ष ई.एस.आई. ने खर्च किये। शुभ लाभ कहें चाहे शुद्ध लूट, ई.एस.आई. को हरियाणा प्रान्त से ही 215 करोड़ 99 लाख 93 हजार, 367 करोड़ 28 लाख 28 हजार, 374 करोड़ 63 लाख रुपये प्रतिवर्ष इन तीन वर्षों में बचे हैं। पिछले वर्ष आमदनी 524 करोड़ 89 लाख रुपये और कुल खर्च 150 करोड़ 26 लाख रुपये, यानी 374 करोड़ 63 लाख रुपये की बचत एक वर्ष में ई.एस.आई. को हरियाणा प्रान्त से ही हुई। आमदनी ज्यादा और खर्च कम कल्याणकारी है। कुल खर्च से ढाई गुणा बचत बहुत कल्याणकारी है।■

फरीदाबाद में जे सी बी चौक पर एक साथी से 'मजदूर समाचार' का जुलाई अंक ले कर आ रहा एक नौजवान बोला, ''तगड़ा लीडर चाहिये।'' कहाँ काम करते हो पूछने पर उस युवा मजदूर ने रोचक बातें बताई। वह 2006 में गुड़गाँव में ***हीरो होण्डा*** की स्पेयर पार्ट्स फैक्ट्री में काम कर रहा था। ''ठेकेदारी-प्रथा खत्म करो'' की आवाज के साथ एक दिन अचानक ठेकेदारों के जरिये रखे 4500 मजदूर काम बन्द कर फैक्ट्री में बैठ गये। और, यह मजदूर फैक्ट्री से बाहर नहीं निकले। कम्पनी क्या करे ? सरकार क्या करे ? फैक्ट्री के अन्दर 4500 मजदूरों को बैठे चार दिन हो गये। मैनेजमेन्ट ने तब बातचीत के लिये मजदूरों से प्रतिनिधि माँगे। दस प्रतिनिधि तैयार और उनमें एक यह युवा मजदूर भी था। मैनेजमेन्ट ने दस-दस लाख रुपये में 9 प्रतिनिधि खरीद कर 4500 मजदूरों के उस उभार को छिन्न-भिन्न किया। बात कर रहे युवा के अनुसार वह न बिकनेवाला एकमात्र प्रतिनिधि था। इस प्रकार के सीधे, प्रत्यक्ष अनुभवों की कमी नहीं है। प्रतिनिधि-नेता के चक्रव्यूह की काट के लिये मजदूरों का अन्य मजदूरों से सम्पर्क-सम्बन्ध बनाना पहला कदम लगता है।

ईस्टर्न मेडिकिट..... *(पेज दो का शेष)* लाख रुपये बकाया, 2009 के तीन वर्षीय मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के अनुसार 1135 स्थाई मजदूरों के 35-36 लाख रुपये बकाया..... स्थाई मजदूरों की तनखा से जुलाई 2011 से काटे ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे भी जमा नहीं किये — गबन।

तीन हजार कैजुअल वरकरों को कम्पनी 2011 के अन्त तक निकाल चुकी थी। बचे थे 1135 स्थाई मजदूर। स्थाई मजदूर कहाँ जायें ? ईस्टर्न मेडिकिट में यूनियन थी। श्रम विभाग में तारीखें। गुड़गाँव डी.सी. को ज्ञापन। विधायक-मन्त्री-मुख्य मंत्री के पास जाना। प्रदर्शन। धरना। अन्य यूनियनों के नेताओं द्वारा समर्थन में भाषण। यह सब किया जा चुका है। थकान तथा हताशा के सिवा इन सब से इन 14 महीनों में और कुछ नहीं मिला है।

कम्पनी किसी की नहीं होती। सरकार से मजदूर कोई आशा नहीं कर सकते। ईस्टर्न मेडिकिट मजदूरों के सम्मुख नई राह का प्रश्न कोई सैद्धान्तिक प्रश्न नहीं रहा है बल्कि व्यवहार का सवाल बन कर तना खड़ा है। उद्योग विहार की हजारों फैक्ट्रियों में काम करते लाखों मजदूरों के पास जाने की आवश्यकता है। एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बनाने के प्रयास नई राहों पर पहले कदम हैं।■

निमन्त्रण

अगस्त में 25 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

स्कूल में एक दिन

पानी खराब हो गया

प्रार्थना के बाद हम कक्षा में पहुँचे ही थे कि बारिश होने लगी। सब बच्चों का मन नहाने का हुआ। सावन की पहली बारिश है, मैडम नहाने दो..... अभी नहीं, घर जाते समय नहा लेना....... पर मैडम, तब तक तो बारिश बन्द हो जायेगी...... टीचर नहीं मानी। सावन की पहली बारिश का पानी खराब हो गया।

केमिस्ट्री की टीचर बोली कि शीट निकाल लो और टैस्ट दे दो। चॉक मानिटर की जेब में था और वह प्रिन्सीपल के पास गया था। मस्त चाल से वह कक्षा में पहुँचा तब मैडम ने बोर्ड पर तीन प्रश्न लिखे। पीछे की बैन्चों पर बैठे सब बच्चों ने कॉपी-किताब निकाल ली और नकल मारनी शुरू कर दी। पहली बैन्च पर एक लड़का होशियार था — पूरी लाइन ने उसी की नकल मारी। एक लड़के ने कॉपी में देख कर एक प्रश्न का उत्तर लिखा, दूसरे प्रश्न का आन्सर लिखने के लिये शीट पीछे की सीट वाले लड़के को दे दी और खुद ने कॉपी पर खाली पैन चलाना शुरू कर दिया। मैडम ने टैस्ट चैक किया — राइटिंग अलग होने के कारण मैडम ने दोनों आन्सर काट दिये और 0 दे दिया।

दूसरा पीरियड फिजिक्स और तीसरा अंग्रेजी का था। अध्यापक स्कूल में आये थे पर क्लास में नहीं आये। बारिश बन्द हो गई थी। कमरे के बाहर पानी जमा हो गया था। केंचुये बाहर आने लगे। केंचुये क्लास में ले आये...... खूब एन्जॉय किया।

चौथा पीरियड बायो का था। शुक्रवार को टैस्ट होना था तब सर से कहा कि आज टैस्ट ज्यादा हैं, सर कल ले लेना। शनिवार को सब बच्चों ने प्लान बनाया। पाँच-छह लड़के सर के पास गये और कहा कि सर सब बच्चे भाग गये हैं। सर बोले कि कोई बात नहीं, सोमवार को टैस्ट दे देना। आज, सोमवार को बायो सर क्लास में नहीं आये थे। टैस्ट था इसलिये कोई भी बच्चा सर को बुलाने नहीं गया। सर कुछ ही दूरी पर चाय पी रहे थे। कल सर पूछेंगे कि बुलाने क्यों नहीं आये तो हम कहेंगे कि सर हम ने आपको इधर-उधर ढूँढा पर आप दिखाई नहीं दिये।

पाँचवाँ पीरियड फिर फिजिक्स का था। अध्यापक फिर कक्षा में नहीं आये।

भोजन अवकाश के बाद हिन्दी पीरियड था। मैडम स्कूल नहीं आई थी। सातवाँ पीरियड अँग्रेजी का था और अध्यापक कक्षा में नहीं आये। आखिरी पीरियड फिर हिन्दी का...... एक लड़के को दरवाजे पर खड़ा कर दिया और मोबाइल पर गाने लगा कर नाचना शुरू कर दिया। खूब नाचे।

आठ पीरियड हो गये। छुट्टी हो गई। खुले आसमान तले हम घर की तरफ चल पड़े।

22.7.2013 — बारहवीं कक्षा का एक छात्र

दो पते : ई.एस.आई.

डायरेक्टर जनरल, ई.एस.आई. कारपोरेशन, पंचदीप भवन, सी.आई जी. मार्ग, नई दिल्ली—110002

पी.एफ.

केन्द्रिय भविष्य निधि आयुक्त, भविष्य निधि भवन, 14 भीकाजी कामा प्लेस , नई दिल्ली—110066

जुड़ने-जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्ष्य है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें , सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का।..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। 4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर... ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।...

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। ''समय नहीं है'' के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है।

फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब ''मजदूर मोर्चा'' के सम्पादक हैं।

जाँचवालों का आना

ब्रॉन लैबोरेट्रीज मजदूर : '' 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में काम करते महीना पूरा नहीं हुआ है और इस दौरान सीफा डिपार्ट में ड्राई सीरप को बोतलों में पैक किया, नोन-बीटा विभाग में पाउडर मिक्स किया, पेनसिलीन डिपार्ट में काम किया, आयन्टमेन्ट ट्युब बनने के स्थान पर मशीन में दवाई डाली तथा रिजेक्शन हटाये, इन्जेक्शन डिपार्ट में प्लास्टिक वॉयल लाइन पर रखी, कैपसूल डिपार्ट में रिजेक्शन हटाये हैं। दवाई फैक्ट्री में पहली बार लगा हूँ। मेरे तथा मेरे साथ लगे लड़कों के ई.एस.आई. और पी.एफ. के फार्म कम्पनी ने नहीं भरे हैं। फैक्ट्री में ज्यादातर लड़कियों और लड़कों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं।

आज मुझे इन्जेक्शन विभाग में लाइन पर काँच की शीशी रखने के काम में लगाया। बारह बजे तक टोटल बोर हो गया और कमर दर्द करने लगी थी। यह तो बीच-बीच में मशीन रुक जाती थी, दो-तीन मिनट का रैस्ट मिल जाता था। 12 बजने में 15 मिनट थी तब मशीन बन्द कर दी। नीचे आया, बाथरूम गया, लन्च का हूटर बजने पर निकला।

12½ बजे काम शुरू करने का हूटर बजा। मैंने तय किया कि अब एक बजे ही काम पर लगूँगा। नीचे चेन्जिंग रूम में ड्रेस पहनी, ऊपर फिर ड्रेस बदलनी पड़ती है। कपड़े के जूते (बूटी) नहीं पहने और छाती के बटन खुले छोड़ कर मैं मस्ती में इधर-उधर घूमा। सीफा विभाग में एक दोस्त के पास गया। फिर ऊपर तीसरी मंजिल पर गया। तीसरी मंजिल पर 8 गेट हैं, एक जैसे हैं। मैं गेट भूल गया। एक को धक्का दे रहा था, गेट खुल नहीं रहा था। एक सुपरवाइजर खड़ा था – सर यह गेट क्यों नहीं खुल रहा। उसने सोचा कि मैं उसका वरकर हूँ। तेरे साथ वाला दूसरा कहाँ है ? पता नहीं। जल्दी घुस जा अन्दर – जहाँ आई ड्राप बनते हैं उस में पहुँच गया। सर मैं आपके डिपार्ट में काम नहीं करता..... दूसरा सुपरवाइजर आया और बोला कि सब को मरवा देगा, जल्दी कर..... अन्दर ही अन्दर मैं काँच वाली जगह के चेन्जिंग रूम गया। अन्दर 6-7 लड़के बैठे थे। एक विजिटर अचानक अन्दर आया – चलो यहाँ ये बाहर भागो, अपने नाम बताओ। हम तो नये लड़के हैं..... थे वे पुराने। विजिटर ने मुझे नहीं देखा। मैं चड्डी-बनियान में था और केबिन से सट कर खड़ा था। उसने शायद मुझे भी कपड़ा समझा। जैसे पुलिसवाले घर में घुस कर सब को मारते हैं वैसे ही विजिटर जगह-जगह धावा बोल रहे थे, केबिनों के दरवाजे खोल-खोल कर देख रहे थे।

चड्डी-बनियान में मैं अलग कमरे में दूसरी ड्रेस पहनने गया। मस्ती में पहन रहा था, खूब समय लगा रहा था। पन्द्रह मिनट में सिर को छोड़ कर बाकी सब कपड़े पहन लिये और ऐसे ही बैठ गया। चलो थोड़ा आराम कर लो। अचानक एक मोटा-सा चश्मा पहने खतरनाक-से विजिटर ने पहला दरवाजा खोला, फिर दूसरा दरवाजा खोला..... मैं वहीं बैठा था। बाहर भाग-बाहर भाग, तेरी टोपी कहाँ है। सर पहन तो रहा हूँ। सुपरवाइजर बुलाया – चार सुपरवाइजर भागते हुये आये। देखो इसके सिर पर टोपी नहीं है, इसका नाम लिखो। एक सुपरवाइजर : तेरी टोपी कहाँ है ? सर पहन रहा हूँ। थी ही नहीं, पहनता कहाँ से। मैंने सोचा थैला ही सिर में डाल लेता हूँ – थैला भी टोपी की तरह नीले रंग का था। उस सुपरवाइजर ने सोचा टोपी पहन रहा हूँ। मेरा सुपरवाइजर : तेरी टोपी कहाँ है ? मास्क कहाँ है ? सर मिल नहीं रही । कहाँ रखी थी ? ऊपर रखी थी, मिल नहीं रही। सर, थोड़ा और आगे आ कर कुछ पहन सकता हूँ ? हड़बड़ी में इधर-उधर टोपी-मास्क देख रहा सुपरवाइजर बोला : नहीं, वहीं खड़ा रह – मैं खुद ढूँढ कर ला रहा हूँ। टोपी ला कर दी। पहनने लगा.... कितना टाइम लगायेगा ! सर, ग्लव्ज नहीं हैं (फटे-पुराने दस्ताने पहन रखे थे).... मैं लाता हूँ। दस सैकेण्ड के अन्दर नये दस्ताने ला कर दिये। तब मैं डिपार्ट में गया।

जाँचवालों के आगे-पीछे सुपरवाइजर घूम रहे थे और वरकरों को शीशे के अन्दर से ही इशारे कर रहे थे। एक मैनेजर को जाँचवालों ने हड़काया तो वह नीचे भाग गया। बड़ी और महँगी गाड़ी में 8-10 लोग आये थे और 12.35 से देख रहे थे कि मजदूर क्या कर रहे हैं। किसी वरकर के पैर में बूटी नहीं – सुपरवाइजर को डाँट। एक सुपरवाइजर अपनी जगह से वाशिंग डिपार्ट जा रहा था तब एक जाँचवाले ने टोका – तुम्हारे पैर में बूटी क्यों नहीं है। सर, दो मिनट का काम है। वापस जाओ और बूटी पहन कर आओ।

विजिटर कहाँ गये यह देखने 3½ बजे डिपार्ट से निकला। चक्कर काट रहे एक सुपरवाइजर ने जल्दी ही अन्दर भेज दिया। जाने नहीं दे रहे थे पर बाथरूम जा रहा हूँ कह कर 4 बजे नीचे चला गया और हूटर होने तक आधा घण्टा वहीं रहा।

जाँचवाले नीचे जा रहे थे तब उन्होंने एक मजदूर को सीढियों पर पकड़ लिया। आज के बाद इस कम्पनी में नजर मत आना। वह लड़का बाहर जा रहा था तब गेटवाले बोले कि कोई बात नहीं, कल फिर आ जाना।'' ■

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये ✶ *अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।* ✶ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत रहती है।* ✶ *महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**